INSTITUTE OF ADVANCE STUDIES IN EDUCATION

BILASPUR (C.G.)

संज्ञानात्मक विकास
Cognitive Development

B.Ed./M.Ed.

Presented By:

Vidya Bhushan Sharma

Lecturer

I.A.S.E. , Bilaspur (C.G.)

INSTITUTE OF ADVANCE STUDIES IN EDUCATION

Bilaspur (Chhattisgarh)

संज्ञानात्मक विकास :-

जीन पियाजे
1896–1980

जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत –

जन्म : 9 अगस्त,1896 स्विटजरलैण्ड

प्रतिपादक : संज्ञानात्मक विकास – 1937

प्रयोग : पियाजे ने अपने पुत्र लारेंट एवं 2 पुत्रियों ल्यूसिन एवं जैक्लीन पर प्रयोग कर यह सिद्धांत प्रस्तुत किया।

जीन पियाजे को विकासात्मक मनोविज्ञान का जनक कहा जाता है।

BOOKS :

* The Psychology of the Child
* The Psychology of intelligence
* The language and thought of the child
* The child conception of the world

– पियाजे का कथन

बच्चें संसार के बारे में अपनी समझ की रचना सक्रिय रुप से करते हैं ।

पियाजे ने अपने स्वयं के बच्चों पर प्रयोग किया और उनकी अवस्थाओं में हुए परिवर्तन को खोजा इस लिए इसे अवस्था का सिद्धांत भी कहते है ।

संज्ञान का अर्थ :- मस्तिष्क की आंतरिक मानसिक क्रियाओं जैसे विचार करना सोचना, याद करना, वर्गीकरण, तुलना, अंतर, समानता, असमानता, समस्या समाधान, तर्क, कल्पना, स्वप्न, पहचान आदि से है ।

संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development):-

संज्ञानात्मक विकास का आशय ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया से है, जो जन्म के समय से ही प्रारम्भ हो जाती है । बालक द्वारा इस भौतिक जगत में प्रवेश करते ही उसके संज्ञानात्मक विकास की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है । बालक अपने विभिन्न अंगों एवं ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता है तथा अपने मानसिक विचारों की कसौटी पर परखता है ।

पियाजे के सिद्धांत के सम्प्रत्यय

1. अनुकुलन (Adaptation) :-

पियाजे के अनुसार बालकों में वातावरण के अनुसार अपने आपको ढालना अनुकूलन कहलाता है। इसकी दो उपक्रियाएँ होती है।

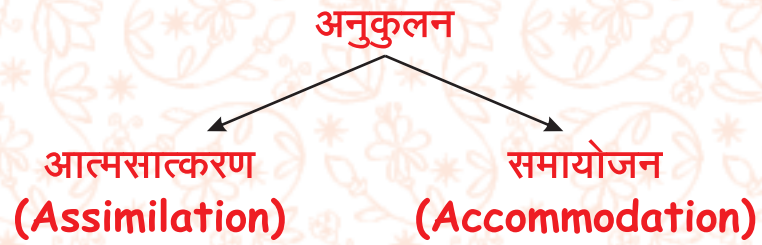

आत्मसात्करण (Assimilation) :-

आत्मसात्करण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बालक समस्या के समाधान के लिए पूर्व ज्ञान को नये ज्ञान से जोड़ता है।

या

नवीन जानकारियों को पूर्व प्रचलित योजना में यथावत (ज्यों का त्यों) व्यवस्थित करना।

या

जब बालक नवीन वस्तु के बारे में पहले से बनी रचना के सन्दर्भ में वहीं अर्थ निकालता हैं, तब इसे आत्मसात्करण कहते हैं।

किसी भी नई जानकारी का हमारी वर्तमान स्कीमा (अवधारणा, बौद्धिक संरचना, अन्विति योजना) में प्रवेश करना ।

जैसे :– बालक पहले गुलाब का फूल देखा था और बाद में वह गुड़हल फूल देखता है और उसे उसी तरह का समझता है ।

समायोजन (Accommodation):-

पूर्व ज्ञान या योजना में परिवर्तन करके वातावरण के साथ तालमेल बैठाना समायोजना कहलाता है।

या

वर्तमान स्कीमा (बौद्धिक संरचना) में सुधार करने, विस्तार करने या परिवर्तन करने से है।

या

वह प्रक्रिया जिसके द्वारा संज्ञानात्मक संरचना (स्कीमा) को संशोधित किया जाता है, समायोजन कहलाता है।

या

जब बालक नवीन वस्तु के आने पर अपनी धारणा को बदल देता है, तब इसे समायोजन / समानिष्टीकरण कहते हैं।

नयी योजना बनाना या पुरानी को संशोधित करना ।

या

प्रचलित योजना के साथ–साथ कोई नई योजना संचालित करना समायोजन कहलाता है ।

उदाहरण :– बच्चा यहाँ पर अपने ज्ञान के साथ तालमेल कर गुलाब और गुड़हल के फूलों में अंतर को समझता है ।

2. संतुलन या साम्याधारण (Equilibration);-

साम्यधारण से तात्पर्य यह है कि इसके द्वारा बालक आत्मसाधकरण और समयोजना की प्रक्रियाओं की बीच संतुलन कायम करता है ।

नोट : साम्यधारण की प्रक्रिया बालकों के पूर्व अनुभवों पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि उनकी शारीरिक परिपक्वता पर भी निर्भर करती है ।

* यह मानसिक सन्तुलन की अवस्था का नाम है ।

* साम्यधारण एक तरह की आत्म–नियंत्रक प्रक्रिया है ।

3. स्कीमा (Schema)/अन्विति योजना/बौद्धिक संरचना;-

पियाजे का स्कीमा से तात्पर्य एक ऐसी मानसिक संरचना से होता है जिसमें बालक जब गुणों को विकास करता है तो एक अवस्था से दूसरे अवस्था में प्रवेश करता है तो वह अपनी बुद्धि का विकास करता है।

या

एक मानसिक संरचना जो सामाजिक संज्ञान को निर्देर्शित करती है।

या

ऐसी मानसिक संरचना, जिसका सामान्यीकरण किया जा सकें।

या

जब बालक के सामने कोई वस्तु आती है तब वह उसे संगठित करके एक अर्थ देने का प्रयास करता है, इसे स्कीमा/बोद्धिक संचरना कहते है।

नोट : जीन पियाजे ने मनोविज्ञान में स्कीमा शब्द का उपयोग पहली बार किया।

4. स्कीम्स (Schemes);-

स्कीम्स से तात्पर्य बालकों के व्यावहारों के संगठित पैटर्न को जैसे आसानी से दोहराया जा सकता है उसे स्कीम्स कहा जाता है। स्कीम्स मानसिक संक्रिया का अभिव्यक्त रुप होता है।

या

व्यवहारों का संगठित पैटर्न, जिसे आसानी से दोहराया जा सकता है, स्कीम्स कहा जाता है।

जैसे : बालक द्वारा विद्यालय के लिए किताबें डेली रुटीन के अनुसार रखना, ड्रेस पहनना, टाई पहनना, जूता पहनना, मध्यान्ह के लिए भोजन रखना आदि।